आधुनिक भारतीय शिक्षा और आदर्शवाद आदर्शवादी विचारों का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव

डॉ0 मो0 उस्मान
एसोसिएट प्रोफेसर
किसान पी0जी0 कॉलेज, बहराइच

भारतीय समाज में दर्शन की विभिन्न धाराएँ आदिकाल से ही गातिान रही है। वेदों में भारतीय दर्शन का प्रारम्भ दिखाई देता है। ऋषियों ने आत्मा और व्रहम के स्वरूप पर वेदों के समय से ही विस्तृत विवेचना की है। आदर्शवादी मान्यता के अनुसार व्रहम सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है यही दर्शन वेदान्त के रूप में विकसित हुआ। भारतीय दर्शन में इसी को आदर्शवाद माना। आदर्शवाद की इस धारा को आदिशंकराचार्य ने रेखांकित किया इसी विचारधारा को रामानुजाचार्य के विशिष्ट द्वैत दर्शन में आग्र बढ़ाया इनके दर्शन में चित, उचित और ईश्वर तोन प्रधान तत्व माने गये है। तत्तपश्चात् निंदवार्काचार्य द्वैताद्वैत दर्शन, मध्वाचार्य के द्वैत दर्शन, बल्लभाचार्य के शुधध्द्राद्वैत दर्शन आदि ने इस विचारधारा को आगे बढ़ाया। बींसवो शताब्दी में कुछ हिन्दु दार्शनिकों ने आदर्शवादी विचारधारा को विवेचित किया। इनमें महषि अरविन्द, श्रीनिवास महाचार्य एवम् सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के नाम विशेष उल्लेखनीय है। भारतोय दर्शन में शिक्षा उसे कहा गया है जो व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करती है– ''सा विद्या या विमुक्तये'' सूक्ति इस तथ्य की पुष्टि करता है।

आदर्शवाद विचारों एवम् आदर्शो को विशेष महत्व देता है। हमें व्यक्तित्व को भौतिक धरातल से ऊपर समना है। व्यक्तित मे आदर्श एवम् विचार दोनों निहित होते है। वातावरण को आदर्शो और विचारो को समाहित करके व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए। व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण, वंशानुक्रम संकल्प शक्ति तथा उस व्यक्ति के आचरण का विशेष महत्व होता है। व्यक्ति इन सारे तत्वों के साथ समायोजन करे ओर इस प्रकार अपने व्यक्तित्व का विकास करें। आज भी भारतीय शिक्षा में व्यक्तित्व विकास के लिए इन तत्वों की अपेक्षा है।

आधुनिक भारतीय शिक्षा के उद्देश्य और वहाँ प्रतिलिम्बित आदर्शवादी दर्शन के तत्व

1. व्यक्तित्व का उत्कर्ष एवं आत्मानुभति
2. सांस्कृतिक विरासत की समृध्दि
3. शाश्वत आदर्शो एवम् मूल्यों की प्राप्ति
4. मनुष्य की मूल प्रकृति का आध्यात्मिक प्रकृति में परिवर्तन
5. नैतिक मूल्यों पर आधारित संसार
6. जीवन में शुचिता का महत्व

यदि हम आधुनिक भातीय शिक्षा के सम्पूर्ण जगत में झांकते है तो हमें ज्ञात होता है कि भातीय शिक्षा आज भी इन सारे उद्देश्यों और इनकी प्राप्ति को महत्व दे रही है। भारतीय शिक्षा आज भी व्यक्तित्व के उत्कर्ष के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा के उपकरणों और माध्यमों की व्यवस्था कर रही है। कोई भी दायित्व मानव बिना आत्मा के स्वरूप को समझे बिना सच्चा और बड़ा आदमी नहीं बना है। वे चाहे गाँधी है। या अरविन्द, विवेकानन्द हों या स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस हो या आचार्य शर्मा सभी ने जीवन में व्रहम और ईश्वर के महत्व को माना है और आत्मानुभूति की शिक्षा को रेखांकित किया है। भारत की उच्च शिक्षा तो निश्चय ही इस उद्देश्य को प्रधान मान रही है।

आदर्शवाद ही एक बड़ी आस्था है सांस्कृतिक विरासत की समृध्दि। आज की भारतीय शिक्षा सभी स्तरों पर, सभी प्रकारों के अपनी संस्कृति की धाती की रक्षा के लिए संकल्पबध्द हैं संस्कृति की परिधि में–धर्म, नैतिकता, कला, परम्पराएँ मान्यताएँ, ज्ञानकोष सभी आते है। बिना इसकी रक्षा और बिना इनके विकास के भाव के भाव के क्या भारत समृध्द बना रह सकता है इसीलिए भारतीय संविधान के द्वारा भारत की संस्कृति की थाती की रक्षा के लिए प्रांविधान किये गये है और भारतीय शिक्षा के सभी स्तरों के द्वारा भारत की संस्कृति की थाती की रक्षा के लिए प्राविधान किये और भारतीय शिक्षा के सभी स्तरों के द्वारा इनके संरक्षण और संवर्ध्दन के प्रयास किये जा रहे है। कला के विकास के लिए, भाषा के विकास के लिए, सांस्कृतिक मूल्यों, मान्यताओं, धराहरों के विकास के लिए उसने देश के राज्यों और केन्द्र में अकादमियों, संस्थान एवम् परिषदें बनायी है। विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रमों मे ऐसे पाठ निर्धारित किये गये है जो भारतीय संस्कृति की विरासत का न केवल परिचय देते है, अपितु उसके संरक्षण के उपायों का भी संकेत देते है। ललित कलाओं के विकास के लिए भी अनेक संस्थान कार्य कर रहे है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भारतीय संस्कृति, भारतीय, आचारसंहिता, राष्ट्र–गौरव के विषय जाड़े गये है। इन सबका निहितार्थ तो यही सिध्द करता है कि यहाँ आदर्शवादी दर्शन की छाप है।

आज पूरा देश मूल्य हास के संकट से ग्रस्त है। विश्वविद्यालयों एवम् महाविद्यालयों के परिसर छात्रों के अनैतिक कृत्यों से पीड़ित है। उनके राके जाने के लिए आदर्शवादी शिक्षा के मूल्यादर्श याद किये जा रहे है। उनके आचरण हेतु नियम–परिनियम बनाये जा रहे है। आधुनिक भारत के सभी महापुरूषों ने भारतीय आध्यात्म के महत्व को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की महत्ता को, जीव में चेतना, आत्म चेतना क महत्व को स्वीकार किया है। निश्चित रूप से ये सारे, तत्व आदर्शवादी है। जीवन में शुचिता का पवित्र साधनों का उच्च विचारों का जितना महत्व है यह बताने की आवश्यकता नहीं। अतः यह स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों पर आदर्शवाद की स्पष्ट छाप है।

यद्यपि आज का भारतीय सामाजिक और शैक्षिक परिदृश्य पाश्चात्स जगत की नंगी भौतिकताग्रही प्रवृत्ति से आक्रान्त हो रहा है। यह घातक भी है, तथापि में, सिध्दान्त और व्यवहार में भ्रष्ट उपायों 'मनी और पावर' का महत्व बढ़ा है, पर इन सबके दुरउपयोग पर हमारी न्यायपालिका अंकुश लगा रही है इससे आदार्शवादी मूल्यों की सम्प्राप्ति का मार्ग प्रशास्त हो रहा हैं अतएव मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ आधुनिक भारतीय शिक्षा पर आदर्शवादी शिक्षा के उद्दश्यों का सिध्दान्त में तो प्रभाव पर्याप्त है ही, हाँ शिक्षा का व्यवहार जगत भले ही इनसे कुछ दूर जा रहा है, जिन्हें रोकने के उपाय अभियान के तौर पर चलाये जा रहे है, जिसे शुभ लक्षण मानना चाहिए।

भारतीय शिक्षा की पाठ्यक्रम भूति और आदर्शवाद– आदर्शवाद पाठ्यक्रम के बारे में अपना विचार रखता है। उसने अपने पाठ्यक्रम के आधार पर मानव जाति के अनुभवों को सभ्यता माना है। प्रसिध्द दार्शनिक प्लेटो ने इस सन्दर्भ में यह माना है कि मानव की क्रियाओं से सम्बन्धित विषय पाठ्यक्रम में होने चाहिए। शिक्षाविद नन एवम् रास महोद ने अपने पाठ्यक्रम में मानव की शारीरिक और आध्यात्मिक क्रियाओं को महत्व दिया है। अब यदि हम वर्तमान भारतीय शिक्षा के पाठ्यक्रम का सम्मान कर रही है। उसने माध्यमिक और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भाषा, साहित्य, भूगोल, विज्ञान, कला, कविता, धर्म, आचार–शास्त्र,अध्यात्म दर्शन, शारीरिक व्यायाम, नीति–शास्त्र, गाणित आदि विषयों को समावेसित किया है। उसने हरबार्ट द्वारा संस्तुत विषय कला संगीत आदि भी पाठ्यक्रम में निर्धारित किया है। किन्तु तब भी यह मूर्खता के सथा कहा जा सकता है कि आज के भारतीय शैसिक पाठ्यक्रम पर आदशवाद का प्रभाव कम है उससक बढ़कर प्रभाव आज प्रयोजनवाद का प्रक्रतिवाद का समाजवाद का, मार्क्सवाद का देखा जा सकता है आज का युग भूमण्डलीकरण का है उदारीकरण का है वैश्विक परिप्रेस्य तेजी से बदला है और बदल रहा है। जीविकापार्जन की तीव्र प्रतिस्पर्धा है। अतएव आज के भारतीय पाठ्यक्रम में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और

प्रबन्धन आदि नए–नए तमाम विषय पाठ्यक्रम में शामिल किये गये है। पैरामेडिकल साइंसेज को भी महत्व मिल रहा है। इन सारी स्थितियों प्रक्रत्तियों को देखते हुए यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में आदर्शवाद का प्रभाव कम है। प्रयोजनवाद और कतिपय अन्य दर्शनों का प्रभाव अधिक है इसे अन्यथा भी नही लिया जाना चाहिए।
जहाँ तक विधियों का सन्दर्भ है इस हष्टि से आदर्शवादी सभी शिसण विधियाँ– प्राश्न संवाद आगमन– निगमन हरवार्ट खेल, अभ्यास, आक्रत्ति आदि शिसष– विधायाँ आर युक्तियाँ समाहत है इनकी आगे भी प्रासंगिकता रहेगी क्योंकि सैकडों नए विषय पाठ्यक्रम में शामिल किये है जो युग की अेपेराभों के अनुकूल है। अतः एवं उनके शिसण के लिए कतिपय अन्य नई विधियाँ सामने आयी है।

ई0टी0वी0 और अन्यान्य नये साधन भी उपलब्ध हो गये हैं जिनका प्रयोग आज ि”ाक्षा को और सजीव, बोधग्राह्य और रोचक बना रहे हैं। अतः इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि यहाँ भी आद”ार्वाद और उसके द्वारा संस्तुत विधियाँ कदापि अप्रासंगिक नहीं है। जो नई प्रौद्योगिकी संचलित या अन्य विधियाँ ि”ाक्षा क्षेत्र में आयी हैं, वे युग की माँग ही है। उन्हें अनुचित नहीं माना जाना चाहिए।

आधुनिक भारतीय ि”ाक्षक और छात्र समुदाय तथा आद”ार्वाद का सन्दर्भ

आद”ार्वाद की ि”ाक्षक और छात्र के बारे में आगत संकल्पना सिद्धान्त रूप में आज भी मान्य और व्यवहृत है। ि”ाक्षक ज्ञानवान हां, जिज्ञासु हो, उत्तम आचरण वाला हो, भाा”वत और श्रेश्ठ मूल्यों को मानने वाला हो– इन बातों से कौन इनकार कर सकता है। आधुनिक भारतीय ि”ाक्षा जगत् का 15 से 25–30 प्रति”ात तक का अध्यापक समुदाय आज भी इन गुणों में, इन वि”ोशताओं से संयुक्त होने में वि”वास करता है। किन्तु क्ले”ा है कि आज का बहुसंख्य अध्यापक समुदाय प्रकृति से और आचरण से प्रयोजनवादी बन गया है, भौतिक पिपासाओं से आक्रान्त है, कर्तव्याचरणों की अपेक्षाओं से विचला है। नि”चय ही यह प्रवृत्ति अच्छी नहीं है। वि”वविद्यालय अनुदान आयोजन, एन0सी0ई0आर0टी0 और अन्यान्य वि”वविद्यालयों के तमाम नियम अध्यापकों के कार्य और व्यवहार सुधार के लिए प्रयत्न”ाील हैं तथापि ये सारे अंकु”ा अध्यापकों को हीन व्यवहारों से सर्वथा रोक नहीं पा रहे हैं। मानना चाहिए कि आज का हमारा अध्यापक समुदाय व्यावसायिक, भौतिकता प्रेमी, दिखावा प्रेमी, कर्तव्यों के सम्पादन में अरूचिधारी हो गया है, जैसा कि वांछनीय नहीं है। यद्यपि आज के भौतिकवादी समाज में सफलता से और सुविधा से जीने के लिए, उसमें जो बदलाव आया है, उसे काफी हद तक असंगत भी नहीं ठहराया जा सकता। तथापि एक पवित्र पे”ो का चयन करने के कारण उससे समाज की अपेक्षायें बढ़ी हैं व समाज का, राश्ट्र का आज भी अगुवा है व राश्ट्र का निर्माता ह। अतः उसे आद”ार्ोन्मुख होना ही चाहिए। इन तथ्यों के प्रका”ा में यह निर्विवाद भाव से कहा जा सकता है कि यहाँ आज आद”ार्वाद का प्रभाव कम है जबकि प्रयोजनवादी, समाजवादी, भौतिकवादी द”ार्नों का प्रभाव उन पर ज्यादा है।

आज का छात्र समुदाय प्रकृतिवादी द”ार्न की ओर भाासन ओर ि”ाक्षा विभाग के नियमों के द्वारा ले जाया जा रहा है। उसे अधिक स्वतन्त्रता प्रदान की जा रही है। ि”ाक्षपा के केन्द्र में उसे रखा जा रहा है। यह मान्य है कि ि”ाक्षा को बालक प्रधान होना चाहिए। किन्तु आद”ार्वादी मान्यता के अनुसार उसे पढ़ने, ज्ञान ग्रहण करने की प्रेरणाएँ भी मिलनी चाहिए। अध्यापक द्वारा उसे ज्ञानवान, बहुज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मविद्, भाास्त्रविद्, कलाविद, और सजा–सँवरा बनाया ही जाना चाहिए। अतएव सिद्धान्तः यहाँ आद”ार्वाद का प्रभाव दश्टिगत है, किन्तु व्यवहारतः वह प्रकृतिवाद और प्रयोनवाद के रास्ते पर ले जाया जा रहा है। जो उदण्डता या अनु”ाासनहीनता आज छात्र समाज में है, या उनमें घर कर रही है, उसे हमारे विचार से आद”ार्वाद के प्रभाव की कमी ही मानना चाहिए। अतएव यहाँ भी बेहतर छात्र अनु”ाासन व्यवस्था के लिए आद”ार्वाद की ओर निहारा जाना चाहिए। तभी आज का हमारा छात्र और

अध्यापक समुदाय प्रभावात्मक काटि के अनु"ाासन का अनुगामी हा सकता है और राश्ट्र का आद"र्ा नागरिक बन कर सत्यम् ि"ावम् सुन्दरम् सरीखे चरम मूल्यों की प्रतिश्ठा कर सकता है।

निश्कर्शतः आद"र्ावाद एक ऐसा द"र्ान है जो आदि काल से अब तक सदा सर्वत्र प्रतिश्ठिता रहा है। भले ही उसकी प्रतिश्ठा सिद्धान्त जगत् में अधि रही हो, आद"र्ावादी ि"ाक्षा के उद्दे"य, आद"र्ावादी पाठ्यक्रम, आद"र्ावादी ि"ाक्षक और छात्र का स्वरूप, आद"र्ावादी अनु"ाासन की धारणा, आद"र्ावादी धर्म द"र्ान का स्वरूप आज भी यथेश्ट अंगों में स्वीकार्य और व्यवहार्य है। श्रेश्ठ मानवीय मूल्यों के विकास की दृश्टि से उसकी चरम महत्ता है। उसके द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्य ि"ाक्षा में आज भी पूर्ववत् आचरणीय है। उसका प्रभावात्मक कोटि के अनु"ाासन का सिद्धान्त आज भी सर्वथा वि"ोश है। किन्तु युग में बदलाव को देखते हुए विज्ञान और प्रोद्यौगिकी की तीव्र समुन्नति को देखते हुए प्रकृतिवादी, समाजवादी, प्रजातंत्रवादी, प्रयोजनवादी आदि द"र्ानों के प्रभाव और उनके अनुप्रयोग को रोका नहीं जाना चाहिए। सुझाव यह है कि हम आद"र्ोन्मुख यथार्थ का दृश्टिभूमि में रखकर प्रगतिवादी बनें और युग की चाल को, युग की माँग को, युग के वि"वासों को, युग में व्याप्त हो रहे 'टन्स' को देखते हुए सम्पूर्ण भारतीय छात्र और अध्यापक समुदाय अध्ययन–अध्यापन, भाोध और अनुसंधान, नेतृत्व और संगठन आदि वांछनीय सारे कार्य करें, व्यावहारिक दृश्टि से यही विधेय है।